

पचमेल वि. (तद्.) 1. पाँच प्रकार की वस्तुओं का मेल 2. अनेक प्रकार की वस्तुओं का मेल जैसे- पचमेल अचार, पचमेल मिठाई।

पचरंग वि. (तद्.) चौक पूरने की सामग्री, जिसमें मेंहदी का चूरा, अबीर, बुक्का, हल्दी और सुखाली के बीज मिले हों।

पचरंगा वि. (तद्.) 1. जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग मिले हों 2. पाँच प्रकार के रंगों का मिश्रण या रंगों वाला 3. पाँच रंगों से रंगा कपड़ा या पाँच रंगों के सूत से बना कपड़ा 3. नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जाने वाला चौक, जिसके प्रत्येक खाने को पाँच रंगों से भरा जाता है।

पचलड़ी स्त्री. (देश.) गले में पहने जाने वाली माला या माला जैसा आभूषण जिसमें पाँच लड़ियाँ होती हैं, कंठहार, कंठमाला।

पचलोना पुं.वि. (तद्.) 1. पाँच प्रकार के नमक का मिश्रण, जिसमें पाँच प्रकार का लवण मिला हो।

पचवना स.क्रि. (तद्.) दे. पचाना।

पचहत्तर वि. (तद्.) ऐसी संख्या जो सत्तर से पाँच अधिक हो तथा जिसे संख्या में इस प्रकार लिखा जाता हो- 75।

पचहत्तरवाँ वि. (देश.) क्रम में जो पचहत्तर का सूचक हो या उसके स्थान पर आए।

पचहरा वि. (देश.) 1. पाँच परतों या तहों वाला, जिसे पाँच बार मोड़ा गया हो, लपेटा गया हो 2. पाँच गुना 3. पाँच बार किया हुआ या पाँच आवृत्तियों वाला।

पचा स्त्री. (तत्.) पकाने या पकने की क्रिया।

पचाना स.क्रि. (तद्.) 1. किसी खाई गई वस्तु या खाद्य पदार्थ को पचाने का प्रयास करना, हजम करना 2. पकाना, जठराग्नि की क्रिया द्वारा खाए गए पदार्थ को रस आदि रूप में ग्रहण करने की स्थिति में पहुँचाना 3. दूसरों का माल हजम कर जाना 4. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ

को अपने में मिला लेना 5. किसी मामले को दबा लेना ताकि भेद न खुल सके।

पचापच स्त्री. (देश.) बार-बार थूकने का भाव जैसे- क्यों पान खाकर हर समय पचापच-पचापच करते हो।

पचारना स.क्रि. (तद्.) 1. ललकारना 2. जिसके या जिनके विरुद्ध काम किया जाता है, उनके बीच उसकी पूर्व-घोषणा करना।

पचाव पुं. (तद्.) पचने की क्रिया या पचने का भाव।

पचास वि. (तद्.) चालीस में दस जोड़कर बनने वाली संख्या, जिसे इस प्रकार दिखाया जाता है 50 साठ से दस कम।

पचासवाँ वि. (देश.) वह संख्या जो गणना में पचास के स्थान पर आती है।

पचासा पुं. (तद्.) 1. एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का संकलन या समूह जैसे- गीत-पचासा, छंद पचासा 2. तोलने वाला वह बाट जो पचास किलो वजन की बराबरी करे या पचास रुपए के बराबर तोले 3. पचास रुपए जैसे- वहाँ जाना है तो एक पचासा देना होगा 4. जेल खाने का घंटा; ऐसा घंटा जिसके बजने से संकट की सूचना मिले तथा सिपाही उसके आधार पर एकत्रित हो जाएँ।

पचासी वि. (तद्.) 1. अस्सी और पाँच की संख्या, अस्सी से पाँच अधिक तथा नब्बे से पाँच कम, इसे अंकों में इस प्रकार लिखते हैं 85।

पचासीवाँ वि. (देश.) गणना में जो पचासी के स्थान पर आए।

पचि स्त्री. (तत्.) 1. पकाने की क्रिया या भाव 2. पाचन 3. अग्नि, आग।

पचित वि. (तत्.) 1. अच्छी तरह पचा हुआ 2. भली प्रकार घुला-मिला हुआ 3. जटित, खचित, भली तरह जड़ा हुआ।